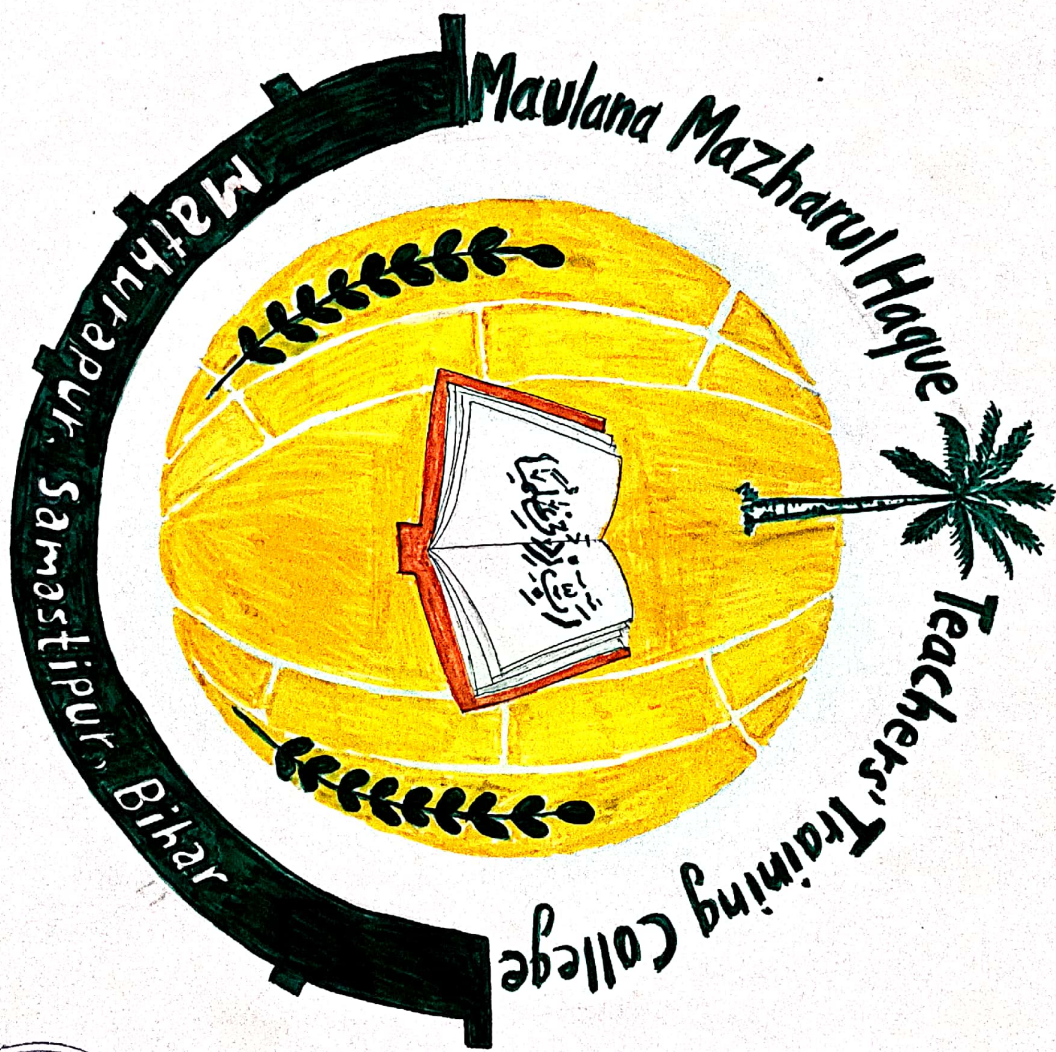






Submitted By



Rupa Kumari
230019



Kajal Kumari
230081



Rimjhim Kumari
230088



Twinkle Kumari
230012



Nitu Kumari
230066



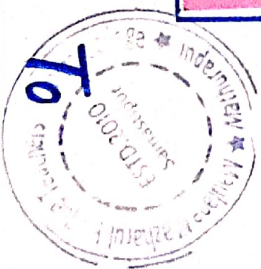
Rajani Kumari
230054



Simmy Kumari
230053

Submitted To

Savita Kumari



MAULANA
MAZHARUL
HAQUE
TEACHER'S
TRAINING
COLLEGE

VARIOUS FORMS
OF ART IN
INDIA

EP-2: DRAMA AND ART IN EDUCATION

B.Ed
1st YEAR
(2023-25)



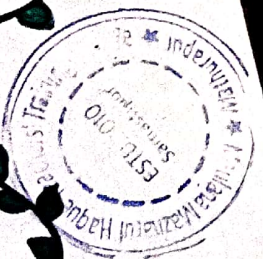


EPC 2: Drama and Art in Education

Various forms of Art in India

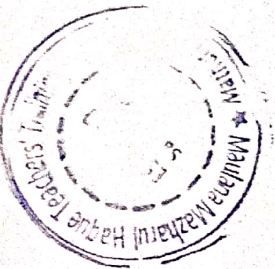
- Painting:-
- Madhubani
 - Pattachitra
 - Kalamkari
- Dance:-

Index



भारतीय चित्रकला
एक जीवंत और विविध
परंपरा है जो देश की समृद्ध

सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक विविधता
और ऐतिहासिक विरासत की दर्शाती
है। हजारों वर्षों से चली आ रही
भारतीय चित्रकला में शैलियों, तकनीकों
और विषयों की एक विराट् मंजुषा
शामिल है, जिनमें से प्रत्येक विभिन्न क्षेत्रों,
ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कारकों से
प्रभावित है। भारतीय चित्रकला स्वरों
से विकसित हुई है, जो अपने
रचनाकारों की रचनात्मकता
आध्यात्मिकता और स्वीकृत
संजयी स्वरनाओं की समर्पित
करती है।



:- मधुबनी पैरिज:-

मधुबनी चित्रकला, पारंपरिक रूप से मधुबनी शहर के आसपास के गाँवों की महिलाओं द्वारा की जाती थी जहाँ मिथिला पैरिज भी कहा जाता है। यह कला नैपाल में तराई क्षेत्र के आस-पास के हिंदुओं तक विस्तृत है। मधुबनी चित्रों की उत्पत्ति रामायण काल से मानी जाती है। जब मिथिला के राजा ने अपने राज्य के लोगों की सीता और राम के पुत्र विराट के अवसर पर अपने घरों की दियारी और धर्म की रंजने के बिये कहा था। लोगों का मानना था कि ऐसा करने से देवता प्रसन्न होते हैं। मधुबनी चित्रकला मिथिला की मिथिला चित्रकारी भी कहती है। मधुबनी चित्रकला मिथिला की एक प्रौढ़ पैरिज है। इस शैली के चित्र दो प्रकार के होते हैं—

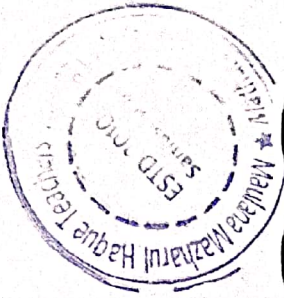
(i) मिथि चित्र
(ii) अरिपन

इसमें अलग-अलग समय और स्थान की वर्णित करने के लिए चित्रों को क्षैतिज और उर्ध्वदिष्ट खंडों में विभाजित किया गया है।
इसमें देवी-देवताओं के चित्र रक्षिद और अक्षर विकृत होते हैं। इनमें आमतौर पर राजा-कृष्ण, मधुबनी आणेश चित्रकला आदि शामिल होती है।

:- पट्टचित्र पेंटिंग :-

पट्टचित्र औडिष्ठा की पारम्परिक चित्रकला है। जैन चित्रों में हिन्दू देवी-देवताओं की छवियाँ आता है। 'पट्ट' का अर्थ 'कपड़ा' होता है।

पट्टचित्र कला प्रमुख रूप से भगवान् भगवान् से प्रेरित है, जिन्हें भगवान् कृष्ण का अवतार माना जाता है। जैन चित्रों का निर्माण धुली कपड़ों की पश्ती की तैली द्वारा आणव में चिपका कर गैयार की जड़ सतह पर किया जाता है। कपड़े से बस प्रकार गैयार की जड़ सतह पर या पट्ट कहलाती है। पेंटिंग्स में अवर्णा किए गए सभी रंग प्राकृतिक हैं और पीटिक्स चित्रकारी यानि अड़िया पेंटर द्वारा पूरी तरह से पुराने पारंपरिक तरीके से बनाई गई है। शबुराजपुर मारत के औडिष्ठा के पुरी जिले में विरसत ब्रह्म गोंव है, जहाँ अपने मारदर पट्टचित्रा चित्रकारी के लिए जाना जाता है।





कलमकारी पेंटिंग :-

Introduction :- ● कलमकारी नाम की उत्पत्ति :- फारसी शब्द

कलम और कारी (शिल्प कौशल) से हुई है।

● कला की इस विधा के लिए आंध्र प्रदेश हर जगह महसूस है। प्रमुख रूप से चित्तूर जिले के श्रीकलाहस्ती और कुरुणा जिले के महलीपट्टनम कलमकारी हैं।

● श्रीकलाहस्ती - कलमकारी की पूरी प्रक्रिया में सप्ताह चरण शामिल है।

● जैसे कि ब्लोक बनाना, इसके बाद कपड़ा उपचार, छपाई और धुलाई शामिल है।

● कलमकारी की श्रीकलाहस्ती शैली का उपयोग ज्यादातर धार्मिक मिवकों में

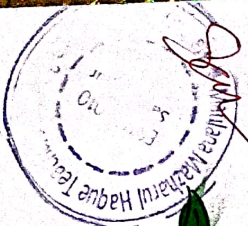
महाकाव्यों को कपड़ों पर बनाने के लिए किया जाता है।

● यह अपने उत्तम दर्जे और कलात्मक बॉर्डर और फ्लोर के लिए प्रसिद्ध है।

● कलमकारी रंग अधिकतर वनस्पती-रंगों से बनाए जाते हैं।

Dance

नृत्य का इतिहास, मानव इतिहास
जितना ही पुराना है। इसका प्राचीनतम
उपग्रं भूत मूर्ति का नाट्यशास्त्र
है। लेकिन इसमें उल्लेख वेदों में
भी मिलते हैं, जिससे पता चलता
है कि प्रागैतिहासिक काल में नृत्य
की खोज ही चुकी थी। इस काल
में मानव भोजन में स्वतंत्र विचारा था।



अरतनाट्यम्:-

अरतनाट्यम् को सबसे प्राचीन नृत्य माना जाता है। इस नृत्य को तीक्ष्णनाडु में देवदासियों द्वारा विकसित व प्रसारित किया गया था। शुभ्र में इस नृत्य को देवदासियों के द्वारा विकसित होने के कारण उचित सम्मान नहीं मिल पाया, लेकिन 20वीं सदी के शुरु में ई. कृष्ण अय्यर और रक्कमणी देवी के प्रयासों से इस नृत्य को दुबारा स्थापित किया गया। अरतनाट्यम् के दो भाग होते हैं, इससे दो अंकों में सम्पन्न किया जाता है - नृत्य और अभिनय। नृत्य शरीर के अंगों से उत्पन्न होता है, इसमें स्वर, आव और काव्यनिक अभिव्यक्ति अफरी हैं। अरतनाट्यम् में शारीरिक प्रक्रिया को तीन भागों में बांटा जाता है - समभंग, अभंग, त्रिभंग अरतनाट्यम् में नृत्य का क्रम होता है। इसकी उत्पत्ति लगभग 2000 साल पहले हुई थी।

पौराणिक मान्यता:-

हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार देवताओं ने ब्रह्मा से आग्रह किया कि एक ऐसे वेद का निर्माण किया जाये जिसके उल्लेख हो कि यह नृत्य देवताओं के लिए होगा और जब भी देवताओं को सजीत और नृत्य का लुफ उठाना हो, तो अरतनाट्यम् ही देखा करेंगे। कहा जाता है, कि स्वर्ग में अप्सराओं के समूहों के साथ मिलकर सभी देवता अरतनाट्यम् ही करते थे। धीरे-धीरे इस नृत्य का प्रसार मंदिरों में भी होने लगा और जब भी किसी देवता को शुष्वा करना होता था, तो इसी नृत्य का सहारा लिया जाता था।

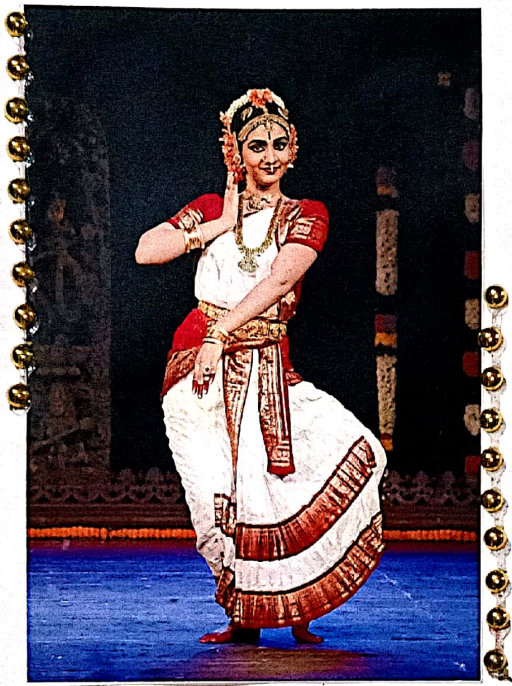
20/11/20

झिझिया नृत्य :-

झिझिया मिथिला का एक प्रमुख लोक नृत्य है। दुर्गा पूजा के मौके पर इस नृत्य को किया जाता है। इस नृत्य में कुवारी लड़कियां अपने सिर पर जलते दिए एवं छिद्र वाली घड़ा को लेकर नाचती हैं। झिझिया नृत्य राजा चित्रसेन एवं उनकी रानी के प्रेम-प्रसंगों पर आधारित है।

- यह नृत्य विजय की देवी दुर्गा के प्रति भक्ति प्रदर्शित करने के साथ-साथ किसी के परिवार, बच्चों और समाज को चुड़ैलों और काले जादू से बचाने के किया जाता है।
- नृत्य में अपने प्रकार के गीत और लय होते हैं। यह नृत्य झिझिया गीत गाते हुए एक निश्चित स्थान पर गोल-गोल घूमकर किया जाता है। गीतों के साथ ढोल, मंजीरा आदि लोक वाद्ययंत्रों का संगीत होता है।
- मिथिला में झिझिया नृत्य की अपनी मौलिकता, पहचान और इतिहास है। गंगरी पर घघकते अंगारे के साथ नृत्य करना अपने आप में शौर्य और कला का अलौकिक प्रदर्शन है।
- समाज में चुड़ैलों की मौजूदगी के कारण 17वीं और 18वीं शताब्दी के आसपास पूर्वजों ने चुड़ैलों से लड़ने के लिए एक अनोखा नृत्य किया और झिझिया नृत्य की नींव रखी। यह घटस्थापना के दिन से विजय दशमी तक लगातार दस शामों तक महिलाओं और लड़कियों द्वारा किया जाता है।







कुचिपुड़ी नृत्य:-

कुचिपुड़ी नृत्य भारत के सबसे प्राचीन शास्त्रीय नृत्यों में से एक है। इस नृत्य की उत्पत्ति कब हुई इसका कोई प्रमाण नहीं है लेकिन, कहा जाता है कि यह हजार साल से भी अधिक प्राचीन और दक्षिण भारत में इसे खास पसंद किया जाता था। कुचिपुड़ी आंध्र प्रदेश, भारत की प्रसिद्ध नृत्य शैली है। यह पूरे दक्षिण भारत में प्रसिद्ध है। इस नृत्य का नाम कृष्णा जिले के दिवि तालुक में स्थित कुचिपुड़ी गाँव के ऊपर पड़ा, जहाँ के रहने वाले ब्राह्मण इस पारंपरिक नृत्य का अभ्यास करते थे। परम्परा के अनुसार कुचिपुड़ी नृत्य मूलतः केवल पुरुषों द्वारा किया जाता था और वह भी केवल ब्राह्मण समुदाय के पुरुषों द्वारा। ये ब्राह्मण परिवार कुचिपुड़ी के भागवतथालू कहलाते थे।

कुचिपुड़ी नृत्य के प्रसिद्ध नर्तक:-

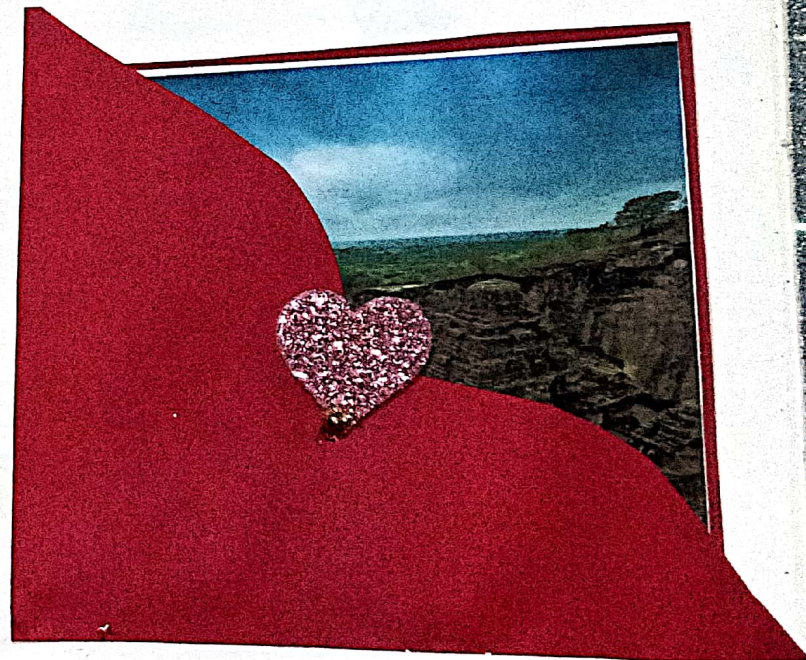
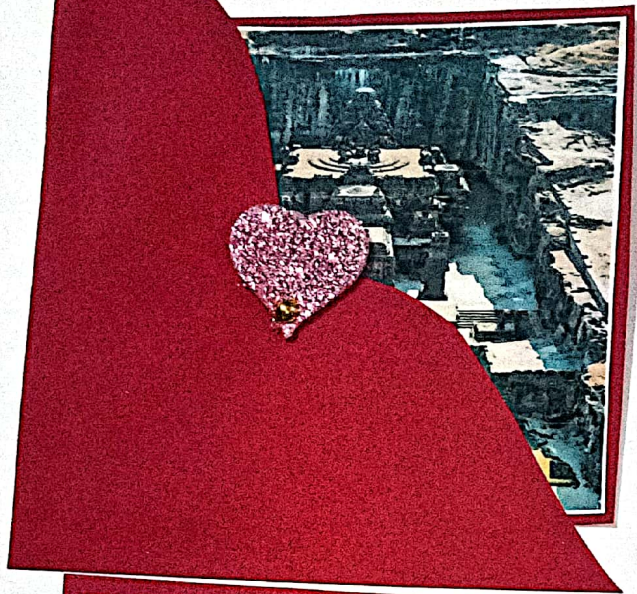
कुचिपुड़ी नृत्य के प्रसिद्ध नर्तक के बारे में जिक्र करने से पहले आपको यह बता दें कि कुचिपुड़ी में कलाकार द्वारा गायन और नृत्य दोनों शामिल हैं। भगवान को समर्पित इस नृत्य को शुरू करने से पहले पवित्र जल छिड़कने, अगरबत्ती जलाने और भगवान से प्रार्थना करने जैसे कुछ अनुष्ठान शामिल हैं। कुचिपुड़ी नृत्य के प्रसिद्ध नर्तक हैं - लक्ष्मी नारायण, राजारेड्डी, राधा रेड्डी, यामिनी रेड्डी और कौशल्या जैसे लोगों का जिक्र मिलता है।



Architecture

भारत के स्थापत्य की
जैसे यहाँ के इतिहास,
दर्शन एवं संस्कृति में
निहित है। भारत की
वास्तुकला यहाँ की परम्प-
रागत एवं बाहरी प्रभावों
का मिश्रण है। भारतीय
वास्तु की विशेषता यहाँ
की द्विबारों के अकृष्ट
और प्रचुर अवकरण में
है।

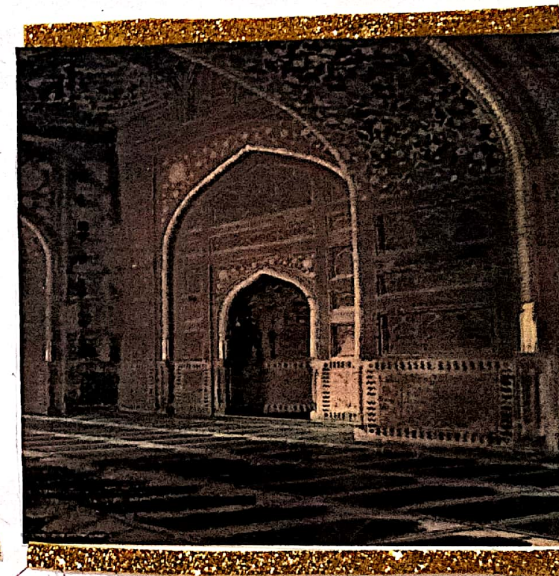
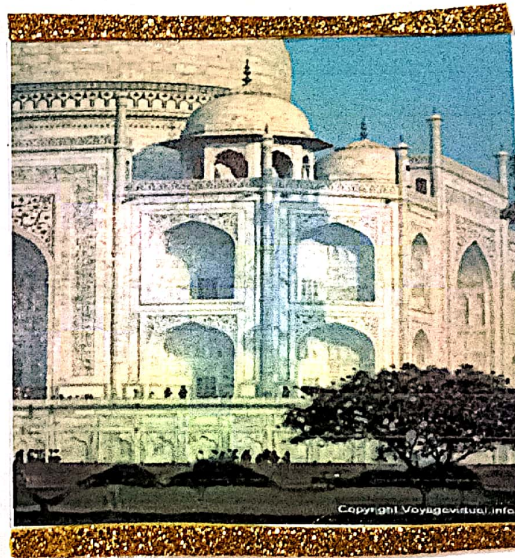
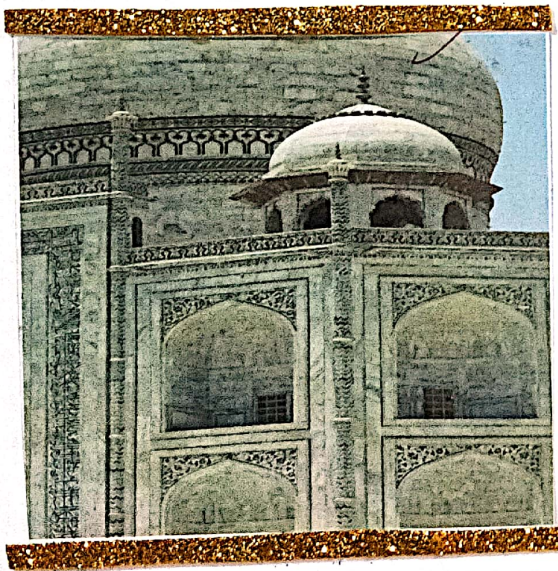
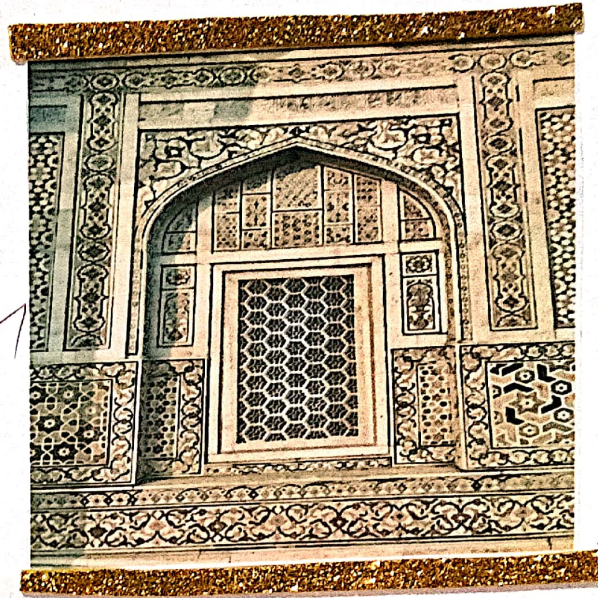
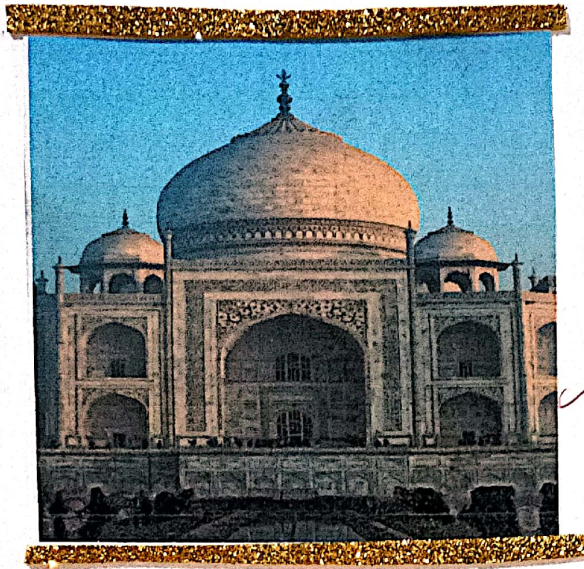




Scanned with OKEN Scanner

कौलाश मंदिर: - Introduction:-

- एक ठोस चट्टान से बना यह आश्चर्यजनक मंदिर, राजा कृष्ण प्रथम द्वारा 760 ई० में शिव के हिमालयी निवास माउण्ट कैलाश का प्रतिनिधित्व करने के लिए बनाया गया था। यह कहना अनिश्चित नहीं होगी कि यह कार्य साहसिक था।
- 3 विशाल खाइयाँ खड़ी चट्टान के ऊपर खोदी गई, इस प्रक्रिया में मंदिर के आकार लेने और इसकी उल्लेखनीय मूर्तिकला सजावट को जोड़ने से पहले हथौड़े और छेनी से 200000 टन चट्टान को हटाना शामिल था।
- मंदिर में कई जटिल नक्काशीदार पैनल हैं, जिनमें रामायण, महाभारत और कृष्ण के साहसिक कार्यों के दृश्य दर्शाए गए हैं।
- दक्षिणपूर्वी छीलरी में 10 विशाल और शानदार पैनल हैं, जो भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों को दर्शाते हैं।
- एवेस में पार्येनन के दोगुने क्षेत्र को कवर करने वाला और फिर आधा ऊँचा होने वाला कैलाश एक इंजीनियर चमत्कार है, जिसे भूटि के लिए शून्य मार्जिन के साथ सीधे सिर से निष्पादित किया गया था।



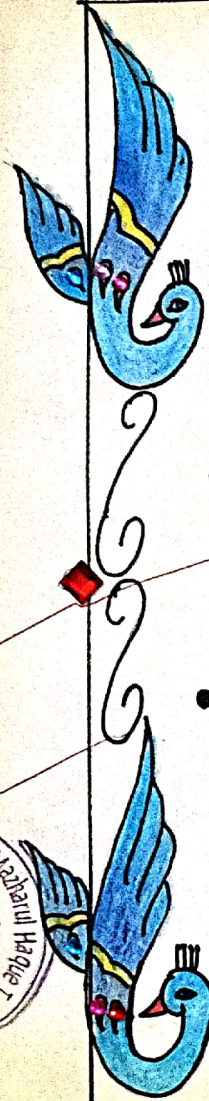
ताजमहल

- ताजमहल इंडी-इस्लामिक वास्तुकला का बेहतरीन और सबसे परिष्कृत उदाहरण प्रस्तुत करता है।
- इसकी उत्पत्ति इसके आयोजन की गतिशील परिस्थितियों और भारत के वही हिस्से पर इस्लामी मुगल साम्राज्य के शासन की संस्कृति और इतिहास से निहित है।
- व्याकुल मुगल सम्राट ~~शहजहाँ~~ ने अपनी पसंदीदा पत्नियों में से एक मुमताज महल की मृत्यु के बाद इस परियोजना को शुरू किया।
- ताजमहल इमारतों और उद्यानों का एक व्यापक परिसर है, जो 22.44 हेक्टेयर (55.5 एकड़) में फैला हुआ है। और इसमें सहस्रक मकबरा, वाटरवर्क्स बुनियादी ढांचा शामिल हैं।
- ताज महल का निर्माण आगरा में यमुना नदी के दक्षिणी तट पर 1632 ई० में शुरू हुआ और 1648 ई० तक काफी हद तक पूरा हो गया।



सूर्य मंदिर

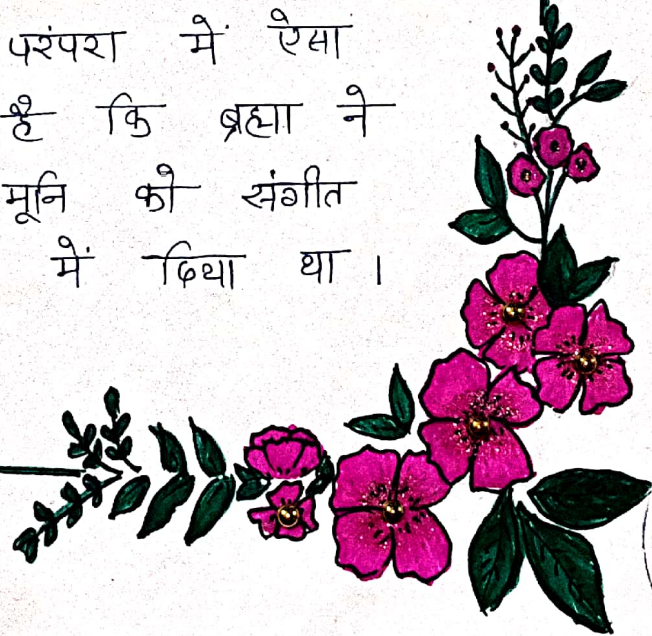
- सूर्य मंदिर भारत के ओडिशा राज्य के कोणार्क में स्थित मंदिर जो हिन्दू सूर्य देवता को समर्पित है।
- इसका निर्माण 13 वीं शताब्दी में पत्थर से किया गया था।
- सूर्य मंदिर हिन्दू उड़ीसा वास्तुकला का शिखर है और अपनी मूर्तिकला नवाचारों और नक्काशी की गुणवत्ता के मामले में अद्वितीय है।
- पाठ्य साहित्य इंगित करते हैं, कि पूर्वी गंगा राजवंश के नरसिम्हा प्रथम (जिसने 1238 और 1264 के बीच शासन किया था) ने 1250 में मंदिर का निर्माण किया था।
- सूर्य मंदिर की योजना में एक पंक्ति में तीन खंड हैं : एक मुख्य मंदिर एक प्रवेश द्वार और प्रार्थना कक्ष से जुड़ा हुआ है; इसके सामने और इससे अलग एक स्तंभयुक्त नृत्य कक्ष है।
- सूर्य मंदिर को 1984 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल नामित किया गया था, और रैन हटाने और प्रवेश कक्ष को बहाल करने की एक परियोजना 2022 में शुरू की गई थी।



MUSIC



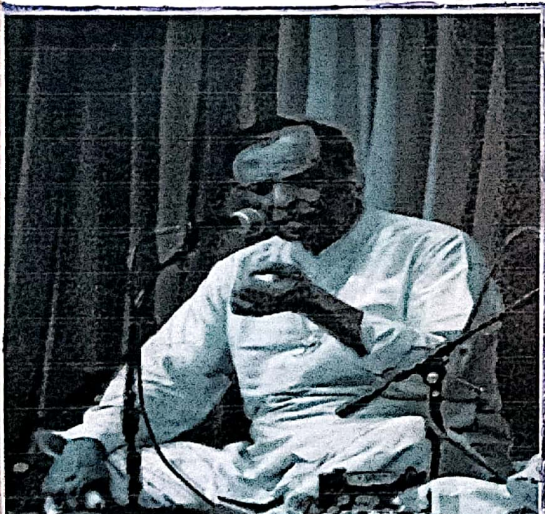
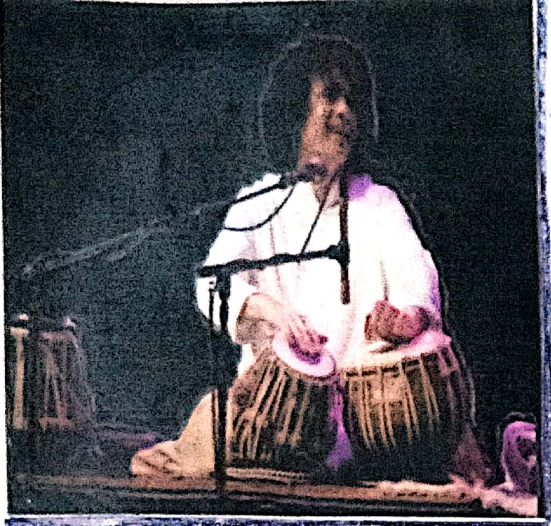
भारतीय संगीत प्राचीन
काल से भारत में सुना
और विकसित होता है।
इस संगीत का प्रारंभ वैदिक
काल से भी पूर्व का है।
इस संगीत का मूल स्रोत
वेदों को माना जाता है।
हिन्दू परंपरा में ऐसा
मानना है कि ब्रह्मा ने
नाशक मूनि को संगीत
वैदिकता में दिया था।



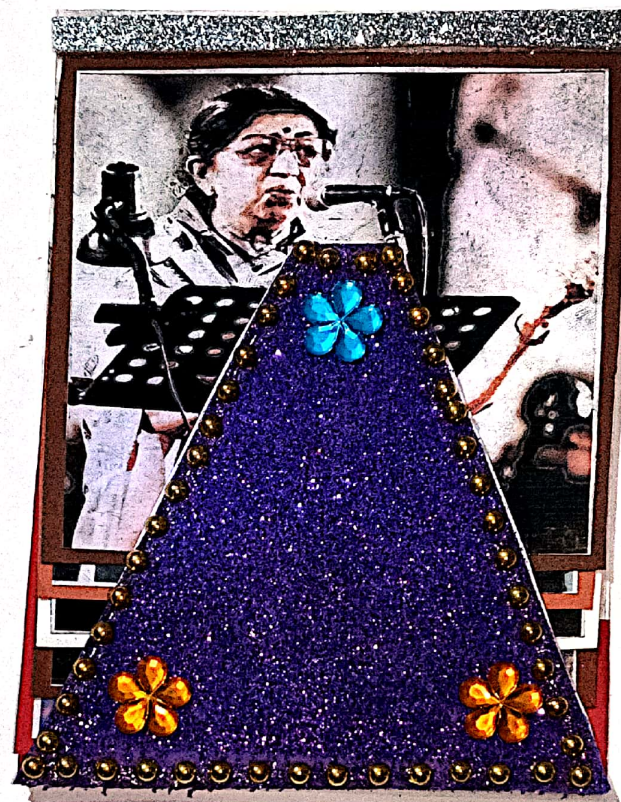


Folk music

- वैदिक साहित्य, जो 1500 ईसा पूर्व तक जाना है, में भारतीय लोक संगीत का पहला वर्णन शामिल है।
- कुछ शिक्षाविदों और उद्योग पेशेवरों का यह भी तर्क है कि भारतीय लोक संगीत उतना ही पुराना हो सकता है जितना कि यह देश।
- लोक गीतों का उपयोग बाद में मनोरंजन के लिए और महत्वपूर्ण अवसरों जैसे शादी, बच्चे के जन्म, त्योहारों आदि को मनाने के लिए व्यापक रूप से किया जाने लगा।
- भारत में कागज के आगमन से पहले इन गीतों का महत्वपूर्ण प्रभाव रहा।
- लोक गीतों का उपयोग बाद में मनोरंजन के लिए और महत्वपूर्ण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक महत्वपूर्ण जानकारी प्रसारित करने के किया जाता है।
- ऐतिहासिक ज्ञान को संरक्षित करने के लिए मनुष्यों के उपयोग के लिए कोई ठोस सामग्री उपलब्ध नहीं थी, इसलिए गीतों के माध्यम से मूल्यवान ज्ञान को प्रसारित करना महत्वपूर्ण हो गया।

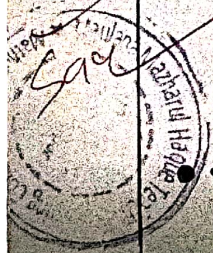


- भारतीय शास्त्रीय संगीत एक अत्यन्त समृद्ध और प्राचीन संगीत परम्परा है जो शास्त्रीय वाद्य, गायन और नृत्य को एकत्रित करती है।
- यह एक अद्वितीय और अगम्य भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है और भारतीय संगीत की विविधता और गहराई को दर्शाता है।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत को दो मुख्य धाराओं में विभाजित किया जा सकता है - हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत।
- हिन्दुस्तानी संगीत उत्तर भारत में प्रचलित है, जबकि कर्नाटक संगीत दक्षिण भारत में विकसित हुआ है।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का अत्यन्त महत्व है।
- राग एक विशेष संगीतिक स्वर संगति होती है जिसमें स्वरों की विशेष क्रमबद्धता और संगति होती है।
- शास्त्रीय संगीत में ताल का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है।
- भारतीय फिल्म संगीत में गीतों के शब्द, संगीत और धुन का मिलन भावनात्मक रूप से बहुत महत्वपूर्ण होता है।



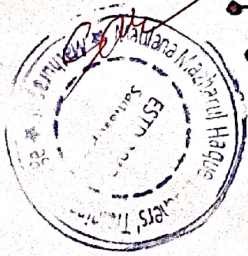
Film music

- भारतीय फिल्म संगीत भारतीय संगीत की विविधता और समृद्धता का प्रतिबिम्ब है।
- यह एक ऐसा माध्यम है, जिसने भारतीय संस्कृति, भावनाओं और जीवन के रंगों को अनेक तरीकों से प्रकट किया है।
- भारतीय फिल्म संगीत की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह समाज में गहरे संवाद का माध्यम बनाता है।
- भारतीय फिल्म संगीत में विभिन्न शैलियों का संगम होता है, जैसे की शास्त्रीय संगीत, पॉप, रॉक, ज़ाज़, ज़ाज़ल भारतीय लोक संगीत और भावनात्मक गीत।
- भारतीय संगीत के कुछ विशेष गायक और संगीतकार ऐसे हैं, जो इसकी महानता में योगदान किया है।
- लता मंगेशकर, किशोर कुमार, एन. रहमान, एस. डी. बर्मन, रवि आर. डी. बर्मन, गुलज़ार और शैलेन्द्र ये केवल कुछ नाम हैं, जिनका योगदान भारतीय फिल्म संगीत की शान को बढ़ाता है।
- भारतीय फिल्म संगीत का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह भारतीय संगीत संस्कृति को विश्वभर में प्रस्तुत करता है।



Textile

परम्परागत रूप से, भारतीय वस्त्र उद्योग, कृषि को छोड़कर एकमात्र उद्योग है जिसने कुशल और अकुशल दोनों प्रकार के ग्रमिकों के लिए भारी मात्रा में रोजगार दिया है। यह उद्योग अब भी रोजगार सृजन के मामले में दूसरे स्थान पर है।





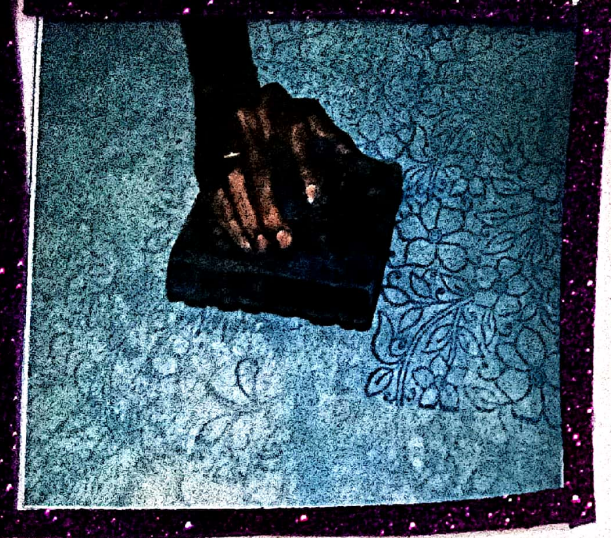
-: Kalamkari :-

कलमकारी जिसका अर्थ होता है “कलम से काम किया हुआ है।” इसमें कपड़े को पहले कसैले पदार्थ और मैस के दूध में भिजोकर कड़ा किया जाता है और फिर धूप में सुखाया जाता है इसके बाद इन कपड़ों पर हाथ से पेंट किया जाता है। ये पेंटिंग सूती कपड़ों पर की जाती हैं।

भारत और ईरान के कुछ देश में इसका प्रचलन बहुत ज्यादा है। कलमकारी में केवल प्राकृतिक रंगों का ही इस्तेमाल किया जाता है।

भारत में मधुबनी पेंटिंग इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

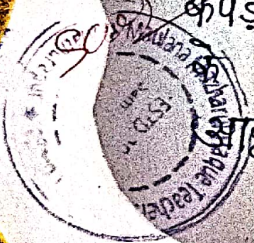


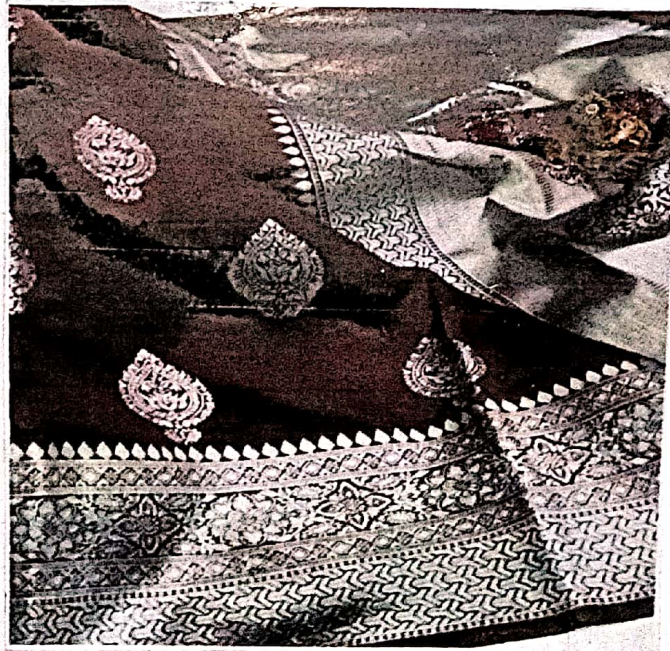
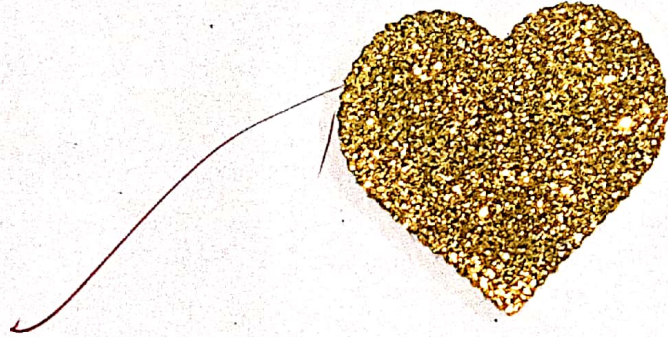


—❖— Chikankari —❖—

चिकनकारी एक पारंपरिक कढ़ाई शैली है। जिसकी उत्पत्ति भारत के लखनऊ शहर में हुई। चिकनकारी की पारंपरिक तकनीक का उपयोग सूती कपड़े पर नाजुक, सफेद पर सफेद डिजाइन बनाने के लिए सदियों से किया जा रहा है। चिकनकारी में रनिंग स्टिच, सैटिन स्टिच और स्टेम स्टिच के संयोजन का उपयोग करके जटिल पैटर्न बनाना शामिल है।

चिकनकारी के लिए उपयोग किए जाने वाले कपड़ों में मलमल, कपास और रेखम शामिल हैं। चिकनकारी डिजाइनों में पुष्प रूपरेखा, पैसले, ज्यामितीय पैटर्न और अन्य जटिल पैटर्न शामिल हैं।





✧ Banarasi Silk ✧

Banarasi silk बहुत ही खूबसूरत साड़ी होती है। इसे अक्सर शादी ब्याह के मौके पर स्त्रियाँ पहनती हैं। रेशम की साड़ियों पर बुनाई के साथ-साथ जरी के डिजाइन मिलाकर बुनने से तैयार होने वाली सुंदर रेशम साड़ी को बनारसी रेशम साड़ी कहते हैं। पहले इसमें जरी के रूप में शुद्ध सोने का इस्तेमाल होता था।

★ बनारसी शिल्क के प्रकार ★

(a) कटान : —

कटान शिल्क एक प्रकार की रेशम है जो बहुत मजबूत और टिकाऊ होता है। कटान शिल्क मुलायम, हल्का और बेहतर शिपिंग गुणवत्ता वाला होता है।

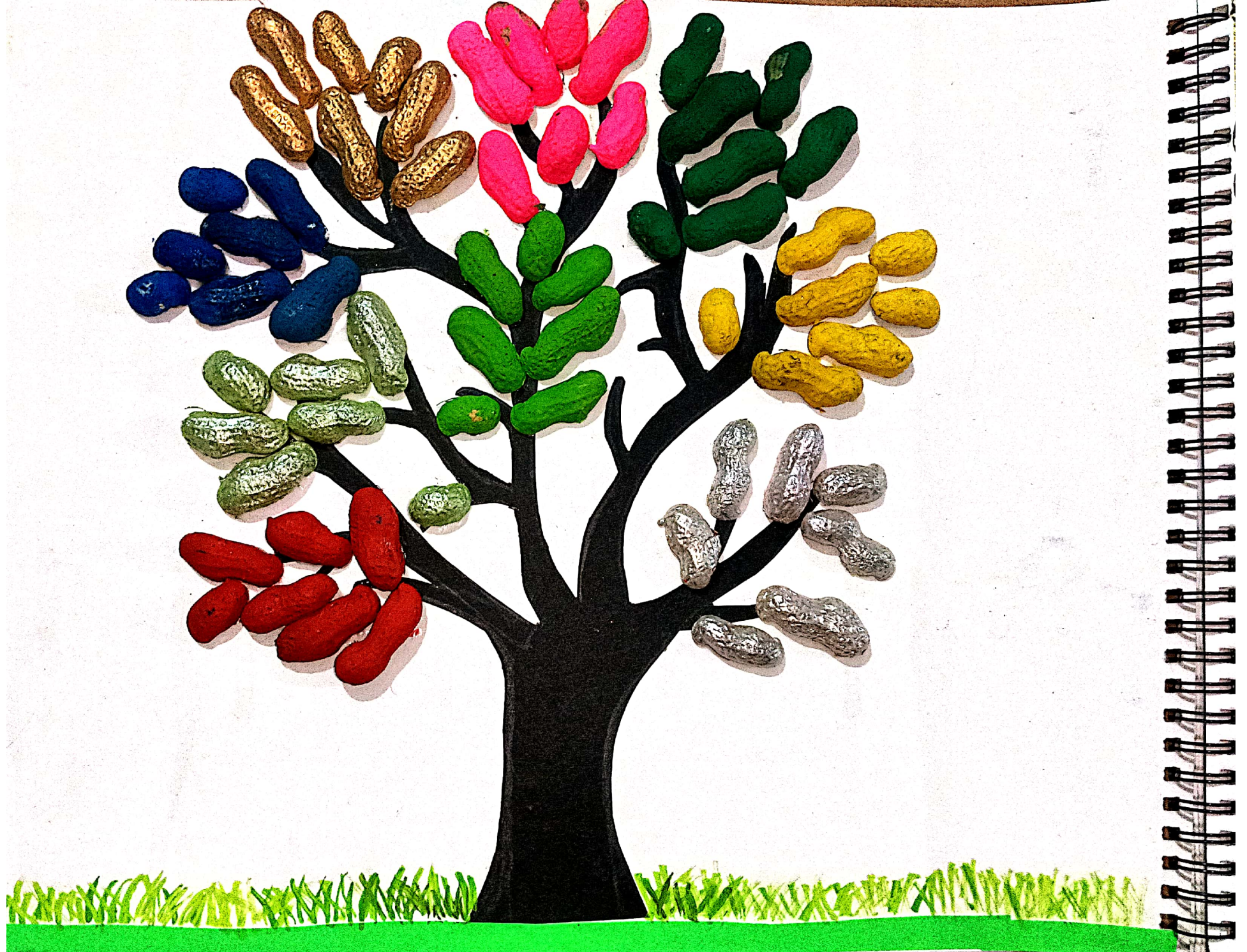
(b) शिफॉन : —

रेशम से बने जॉर्जेट को अत्यधिक मुझे हुए धागों से बनाया जाता है। यह कपड़ा थोड़ा भारी और टिकाऊ होता है।



MAULANA MAZHARUL HAQUE TEACHERS TRAINING COLLEGE MATHURAPUR, SAMASTIPUR







Chairman M.M.H.T.T. C.
Md. Abu Tameem



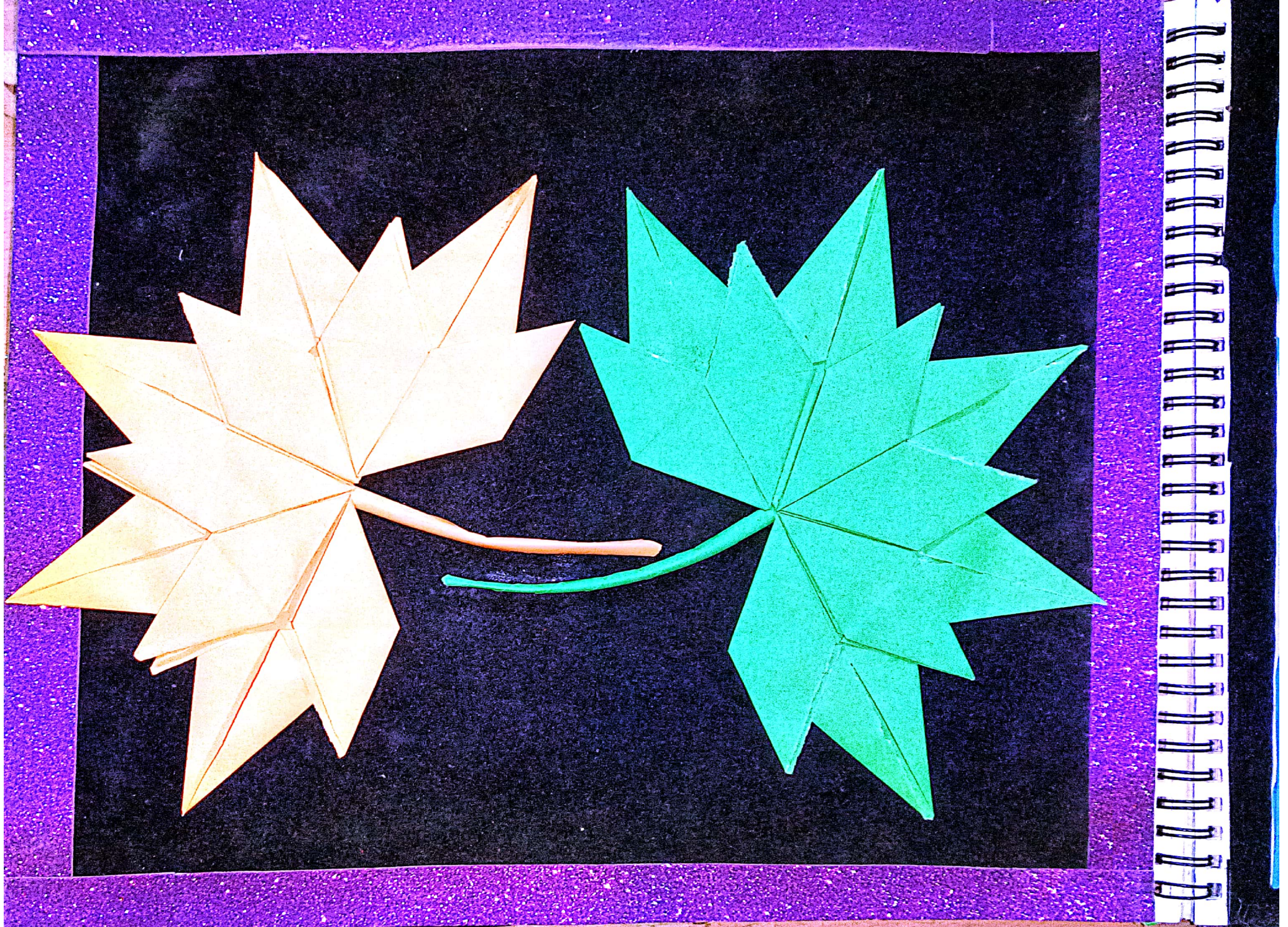
Secretary M.M.H.T.T. C.
Md. Abu Sayeed



Director M.M.H.T.T. C.
Md. Abu Zahid



Principal M.M.H.T.T. C.
Dr. Anjum Warish





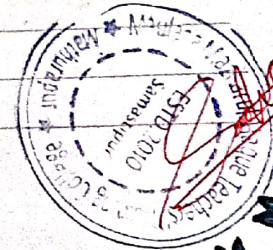
बिहार के लोक नृत्य एवं नाद





INTRODUCTION OF BIHAR DANCE

Dance is a form of art that involves rhythmic body movements that accompany music. It can be a form of self-expression and recreation, or it can be a competitive activity. Dance has been a part of human culture, rituals, and celebration since ancient times...





①

साह - जतिन

②

सिद्धिया

③

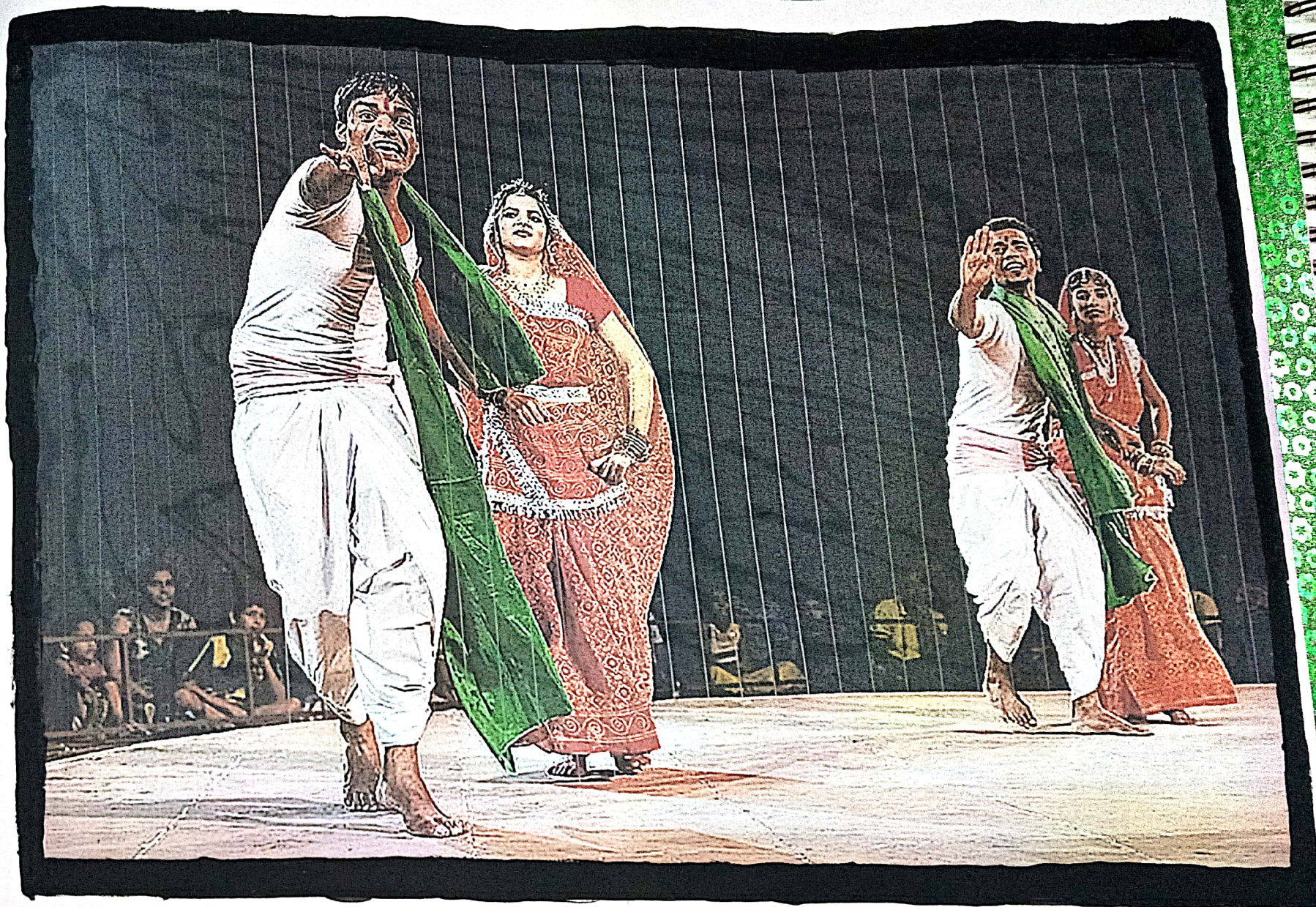
नृत्य

के

⑤

⑥

शुभर



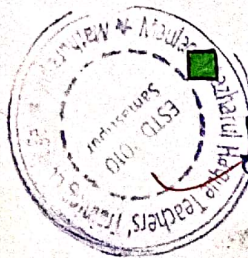
जट - जटिन नृत्य

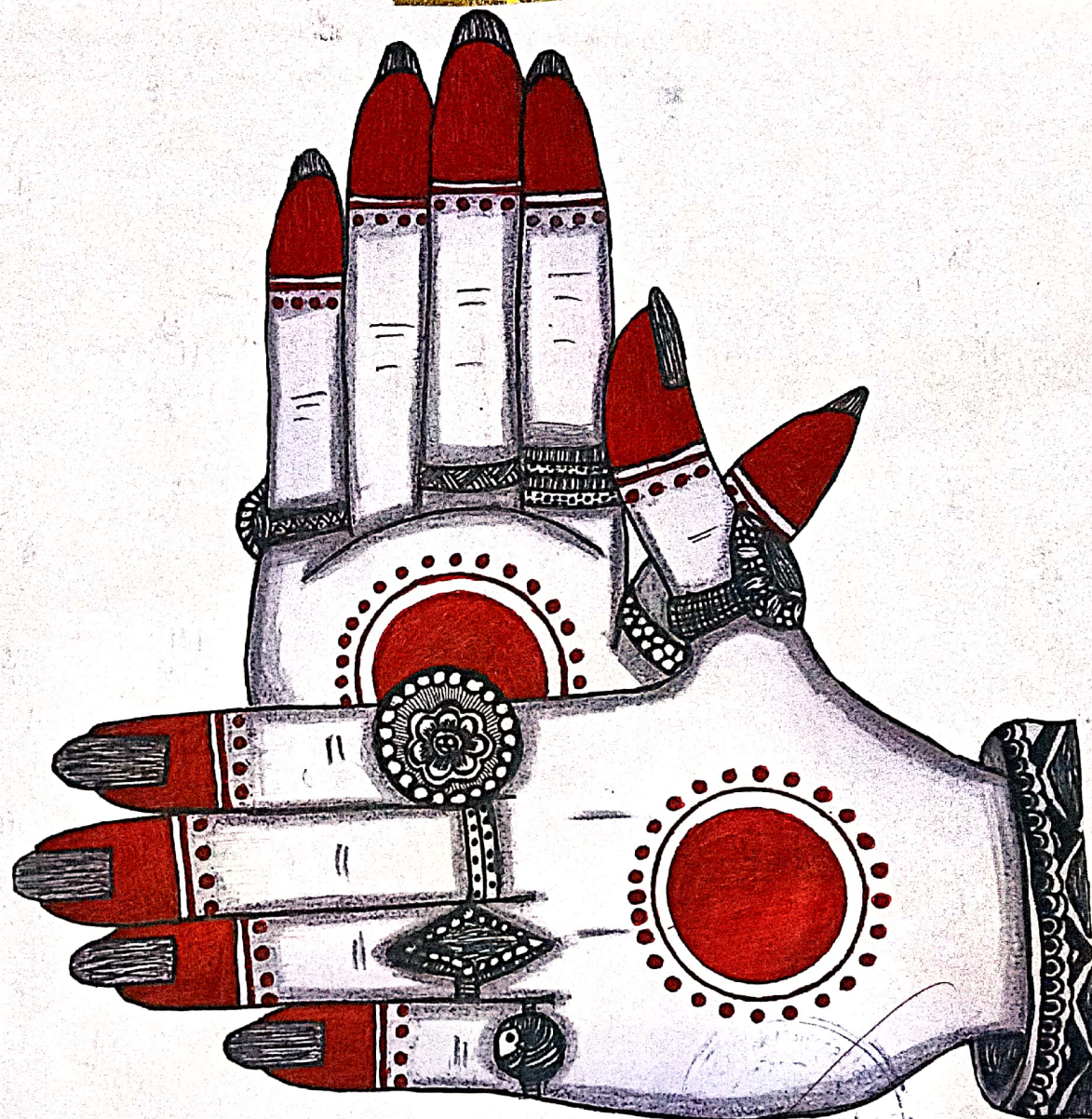
बिहार में विशेष रूप से उत्तर बिहार में जट जटिन नृत्य मिथिला और कोशी क्षेत्र का सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य है। यह नृत्य बारिश के लिए एक प्रार्थना के साथ शुरू होता है। इसमें दो नाचने की टीली होती है, जो नाच-गान करके, नौक झांक करके, मान-मनोबल करके सुखी दाम्पत्य जीवन की कामना करते हैं।

विशेषताएँ :-

- जट - जटिन नृत्य के मूल विषय में प्रेमी जट और जटिन की कहानी बताई गई है जो अलग हो गए थे और कठिन परिवेश में रहते थे।
- महिलाओं का नृत्य जट जटिन मानसून के मौसम के दौरान चांदनी रात में किया जाता है।

इस नृत्य के माध्यम से, गरीबी, दुःख, प्रेम, प्रेमियों या पति-पत्नी के बीच बहस जैसे विभिन्न सामाजिक रूप से संबंधित विषयों का भी प्रचार किया जाता है।



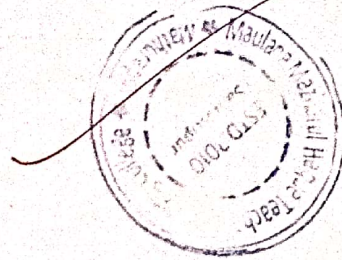






झिझिया नृत्य

झिझिया मिथिला का एक प्रमुख लोक नृत्य है।
दुर्गा पूजा के मौके पर इस नृत्य में लड़कियां बड़-
पढ़ कर हिस्सा लेती हैं। इस नृत्य में कुंवारी
लड़कियां अपने सिर पर जलते दिए रखें छिन्न
वाली धड़ा को लेकर नाचती हैं। झिझिया
नृत्य राजा चित्रसेन एवं उनकी रानी के प्रेम
प्रसंगों पर आधारित है।

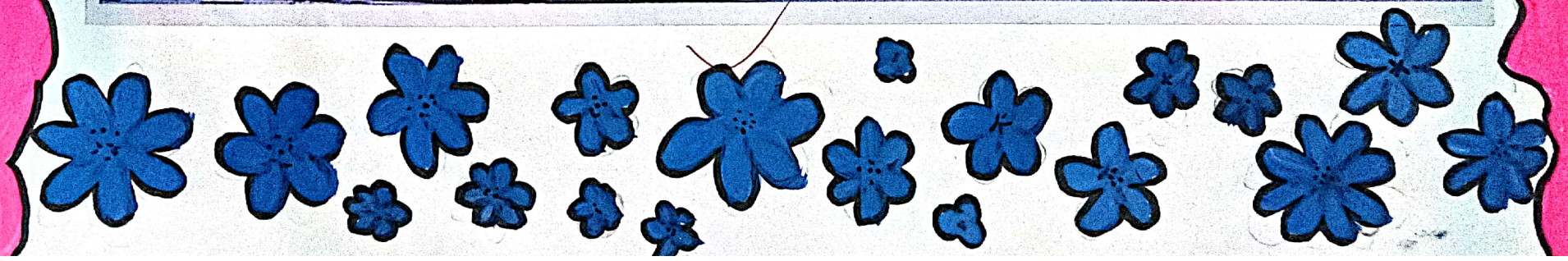


“नृत्य”

इंसान तो महज
एक कलपुतली है,
जो जीवन ताल पर
नृत्य करने को मजबूर
होता है ॥





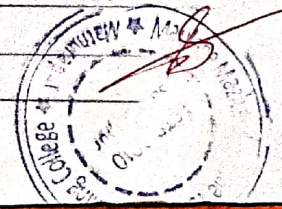


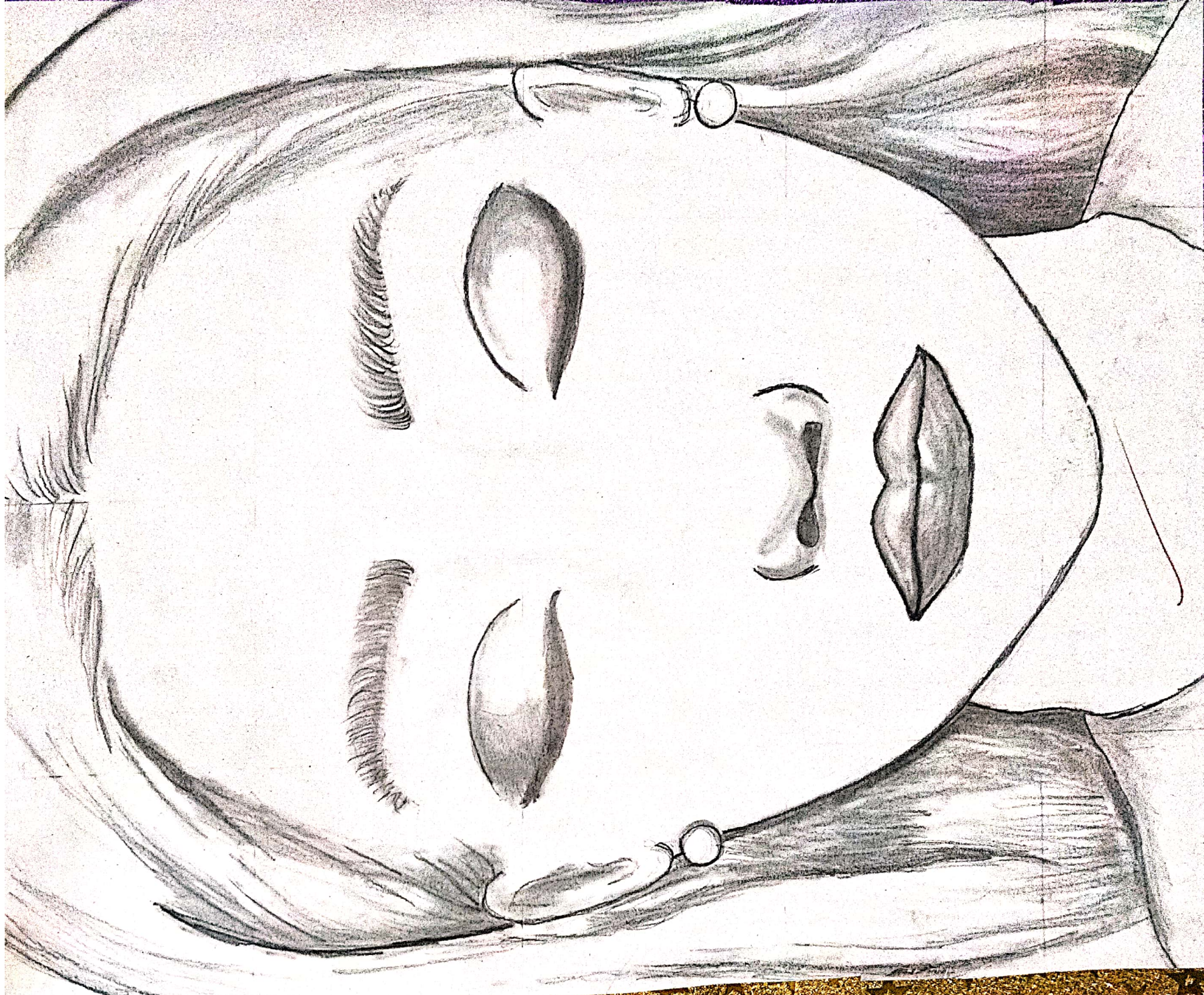
● झुमरी नृत्य ●

भारतीय राज्य बिहार में सबसे प्रसिद्ध नृत्यों में से एक है झुमरी नृत्य पूर्वी, पंचपरण का व्यापक रूप से जाने वाला नृत्य है। इन नृत्यों का स्थानीय विरासत और संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है।

यह नृत्य गुजराती शरवा नृत्य के बराबर है। यह नृत्य शैली विशेष रूप से विवाहित महिलाओं के लिए बनाई गई है। भारतीय राज्य बिहार में सबसे प्रसिद्ध नृत्यों में से एक है झुमरी नृत्य। इन नृत्यों का स्थानीय विरासत और संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है।

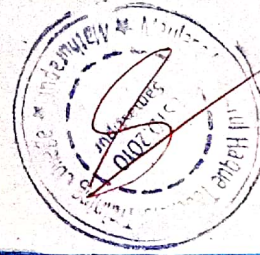
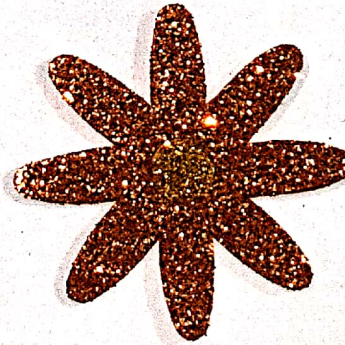
यह नृत्य गुजराती शरवा नृत्य के बराबर है। यह नृत्य शैली विशेष रूप से विवाहित महिलाओं के लिए बनाई गई है। मूलतः झुमरी नृत्य एक सामुदायिक नृत्य है जो समूहों में किया जाता है। यह नृत्य कुछ त्योहारों के दौरान और फसल के मौसम के दौरान किया जाता है। यह मुख्यतः बड़े रंग विशाल खुले स्थानों में किया जाता है।





Drama

(नाटक)



Introduction :-

ईश्वर द्वारा लिखा गया है कुछ लोग कहते हैं और इसका रहस्य हमने किया है। हम सभी जानते हैं।

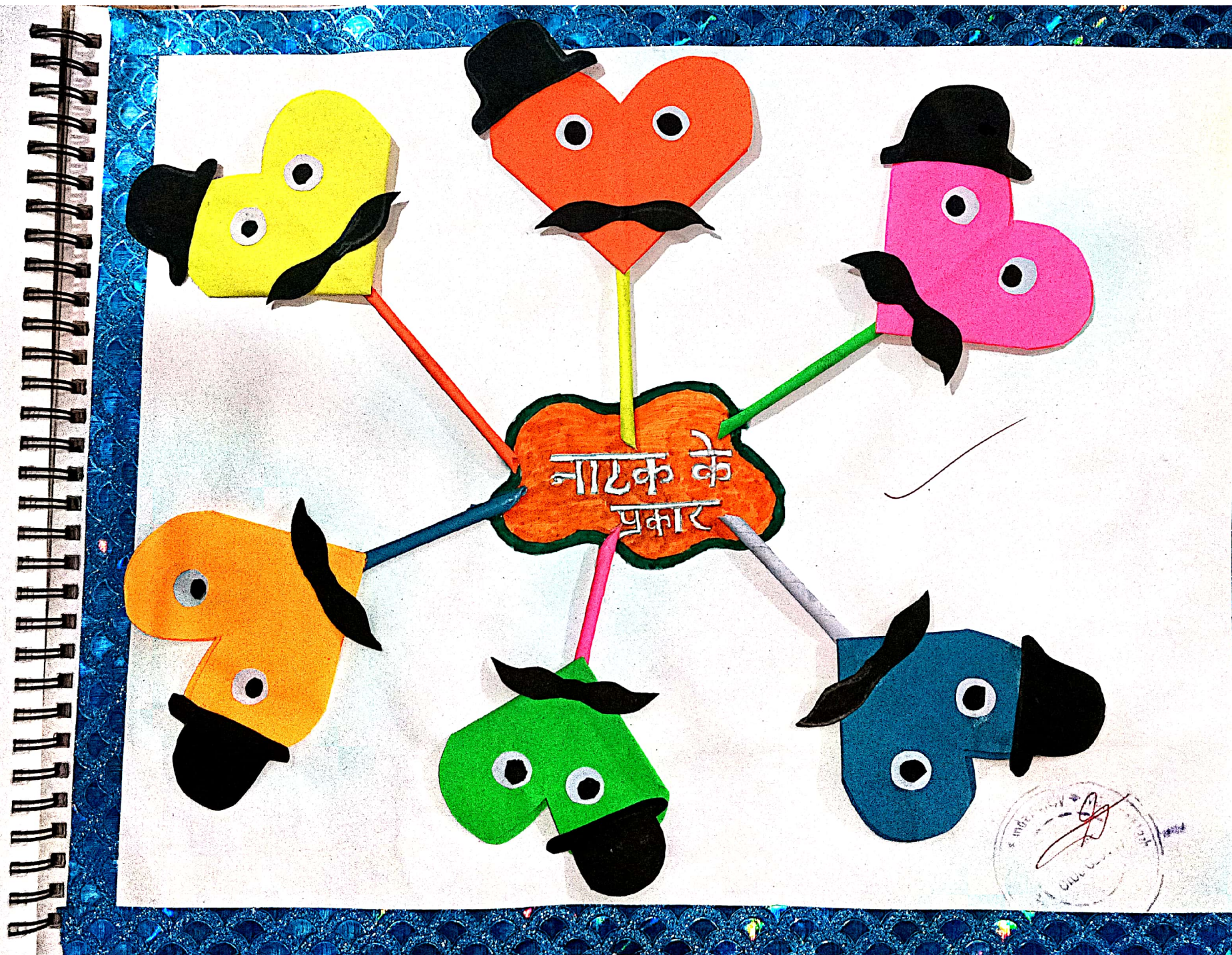
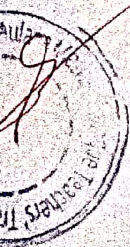
नाटक एक स्टैंडअलोन अवधारणा के रूप में और साहित्य के दायरे में कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में महत्वपूर्ण महत्व रखता है। यह एक ऐसी शैली है जो मंच पर पात्रों के अभिनय के माध्यम से एक कथा प्रस्तुत करती है।

जिसमें अक्सर संवाद, क्रियारं और संघर्ष शामिल होते हैं जो दर्शकों के सामने प्रकट होते हैं। साहित्य के क्षेत्र में, नाटक अक्सर प्रदर्शन के लिए लिखे गए लिखित कार्यों को संदर्भित करता है। जिसमें नाटक और नाटकीय स्क्रिप्ट शामिल होती हैं। जिन्हें एक मंच पर अभिनेताओं द्वारा अभिनय करने के लिए डिज़ाइन किया जाता है।

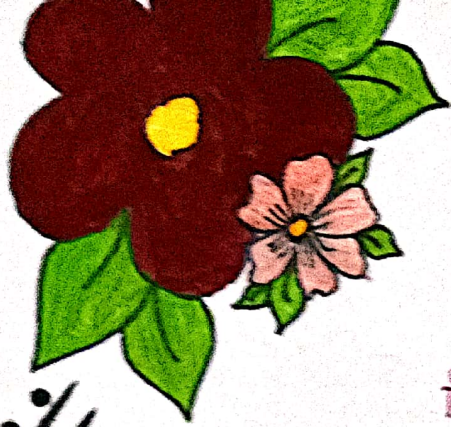


हैं और
जानते
कारण के
क आभिव्यक्ति
रक रसमी
के माध्यम

रं और संघर्ष
होने हैं।
के लिए
होती है
मन्य करने के







विदेसीया नाट्य

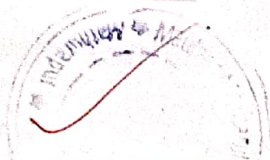
विदेसीया, मोजपुरी नाटककार मिथारी ठाकुर का एक मोजपुरी नाटक है। यह मिथारी ठाकुर द्वारा महिला सशक्तिकरण, प्रवासन और वाराणसी पर लिखे गए कई नाटकों में से एक है। इसकी लोकप्रियता के कारण यह मोजपुरी क्षेत्र की लोक नाट्य शैली बन गई। कुछ विद्वानों ने इसे आ दिनों समागण जितना लोकप्रिय होने का भी जवा दिया है।

आफ़की बेहतर जानकारी के लिए बता दें कि जो लोग गाँव छोड़कर शहर आते हैं उन्हें विदेसीया के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार ऐसे ही एक व्यक्ति थे, मिथारी ठाकुर। वह एक प्रसिद्ध लोक कलाकार और नाटककार थे। ठाकुर ने विदेसीया सहित बारह नाटक और बहुत सारे गीत लिखे हैं।

ध्यान रहे की विदेसीया की यह कला शैली हिंदू जाती प्रथा की तथाकथित निचली जाती से संबंधित था। इस कला शैली का सार समाज की बुराइयों पर प्रकाश डालना है और अमानुष अर्थपंशाक को कम महत्व दिया जाता है।



COLLEGE UNIFORM

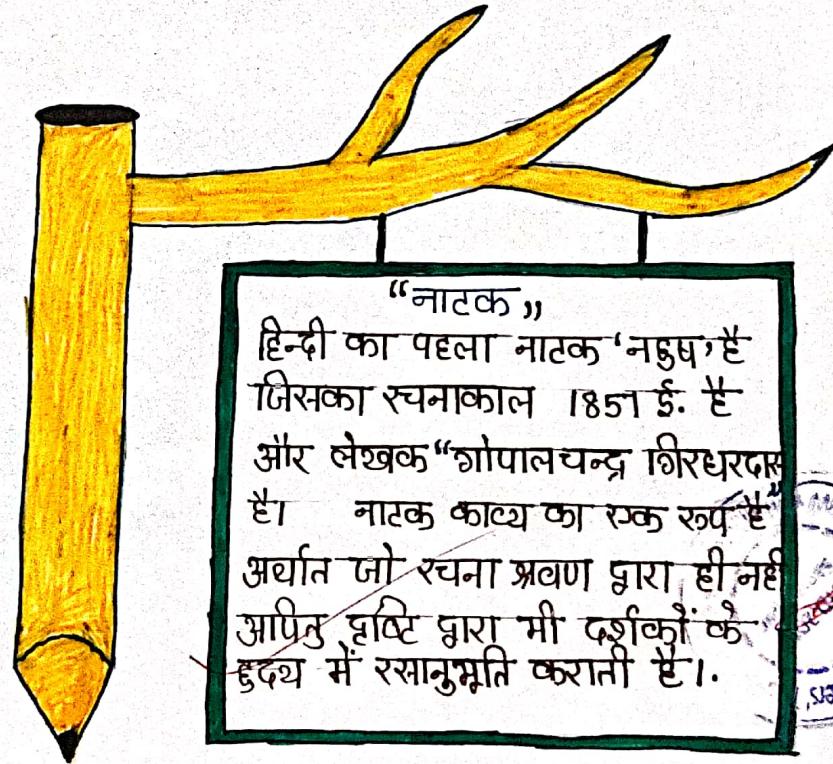
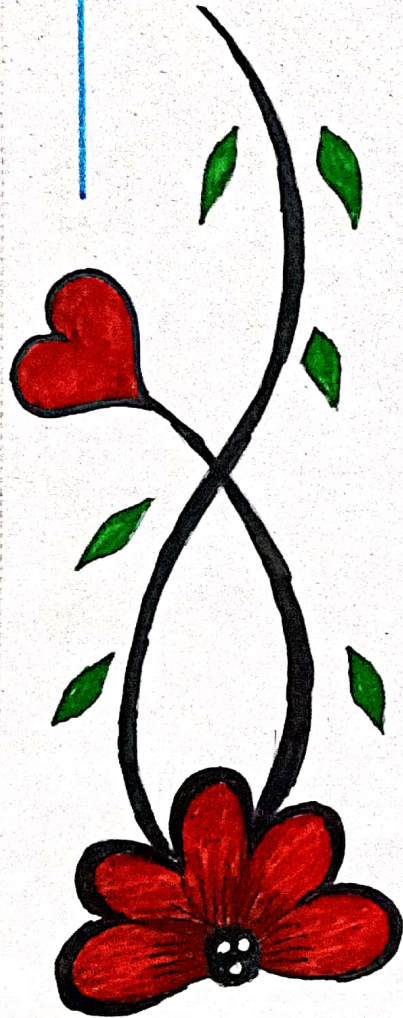




सामा चकेवा नाटक

सामा - चकेवा लोकनाट्य बिहार में प्रत्येक वर्ष कार्तिक माह में शुक्ल पक्ष की राप्ती से पूर्णमासी तक किया जाता है। इस लोकनाट्य में कुमारी कन्याओं के द्वारा अभिनय प्रस्तुत किया जाता है। अभिनय में 'सामा' अर्थात् श्यामा तथा चकेवा की ममिका निर्माई जाती है। सामूहिक रूप से गाय जाने वाले गीतों में प्रश्नों एवं उत्तरों के माध्यम से विषयवस्तु प्रस्तुत की जाती है।...

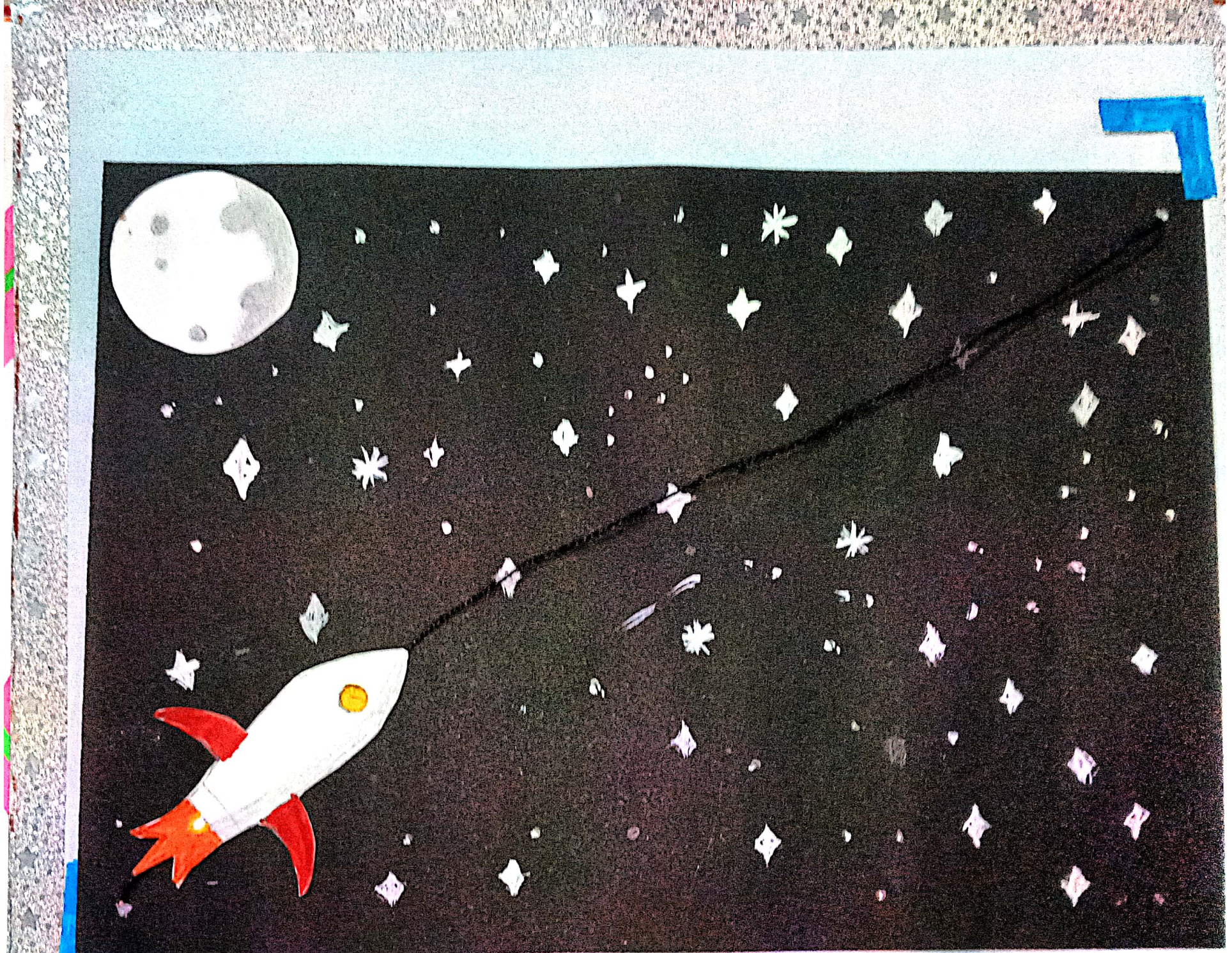
इस लोकनाट्य में पात्रों को मिट्टी द्वारा बनाया जाता है लेकिन उनका अभिनय बालिकाओं द्वारा किया जाता है।

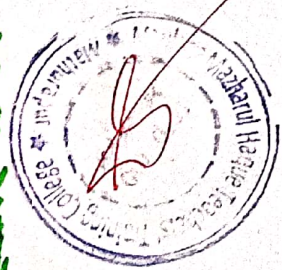
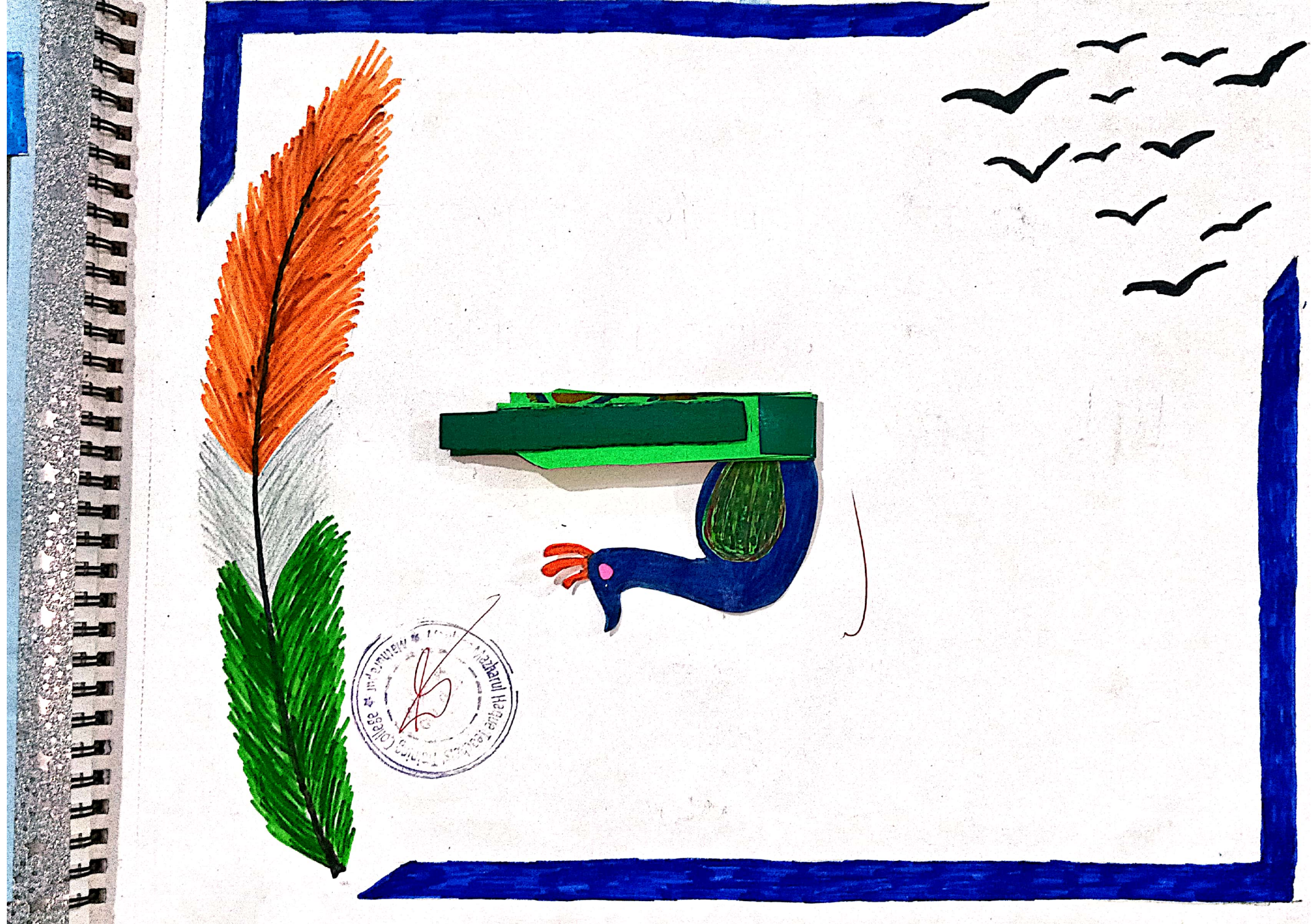


“नाटक”

हिन्दी का पहला नाटक 'नहुष' है जिसका रचनाकाल 1851 ई. है और लेखक "गोपालचन्द्र गिरधरदास" है। नाटक काव्य का एक रूप है अर्थात् जो रचना श्रवण द्वारा ही नहीं अपितु दृष्टि द्वारा भी दर्शकों के हृदय में रसानुभूति कराती है।





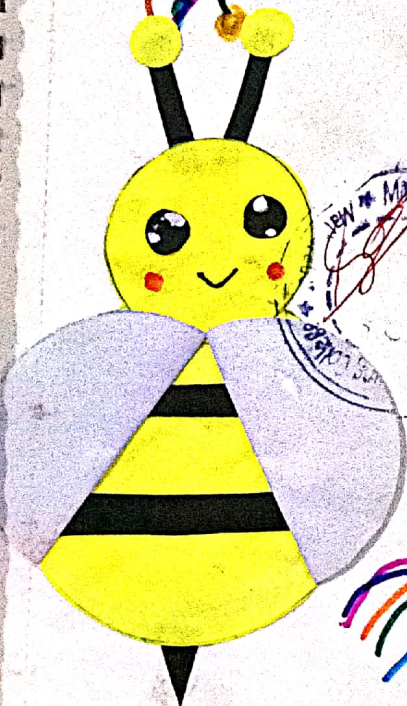




डोमकच नाट्य

डोमकच भारतीय राज्यों बिहार और झारखण्ड का एक लोक नाट्य है। बिहार में डोमकच नाट्य मिथिला और मोजपुर क्षेत्रों में किया जाता है।

डोमकच नृत्य का चलन ज्यादातर अगहन से आषाढ़ महीने तक होता है। यह एक सामूहिक रूप में किया जाने वाला नाट्य है। जिसमें युवक एवं युवतियों दोनों भाग लेते हैं। ये नाट्यकार रात भर डोमकच नाट्य करते हैं।







noh
xroul